Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open access & indexed, Online Journal)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 07, Issue-IV, April 2022

पर्यटन का केन्द्र–जूनागढ़: एक समीक्षात्मक अध्ययन
(Tourism Hub - Junagadh: A Analytical Study)

Dr. Pushplata Solanki[a,*] **Dr. Devendra Singh Solanki**[b,*]

[a] *Assistant professor, Govt. College Tonk, Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer (India).*

[b] *Assistant professor, Govt College Kekri (Ajmer), Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer, (India)*

KEYWORDS

पर्यटन का केन्द्र, रास्थान के किला एवं महल,

ABSTRACT

साहस और शौर्य की स्थली रहा राजस्थान रंगों से भरा है। जहां पर स्थित गढ़ और राजमहल अपने सौंदर्य और शौर्य गाथाओं को सम्मोहित करने में बेजोड़ है। राजस्थान के अनेक किलों में से एक बीकानेर का किला जूनागढ़ स्थापत्य शिल्प, भौगोलिक स्थिति, विलक्षण कला सज्जा का आश्चर्यजनक उदाहरण है। जिसकी नींव बीकानेर के महाराजा रायसिंह ने 30 जनवरी 1585 ईस्वी में रखी थी। यह 12 फरवरी 1594 ई. को पूरा हुआ। यह धान्वन दुर्ग लाल पत्थरों से निर्मित है तथा अपने सौंदर्य के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है।

परिचय

राजस्थान की ऐतिहासिक धरोंहरें साहस और शौर्य वीर गाथा को दर्शाती है। राजस्थान अपने अदम साहस के लिए सदियों से विख्यात है। इसलिए हम कह सकते है कि साहस और शौर्य स्थली रहा राजस्थान रंगों से भरा है। जहां पर स्थित गढ़ी, गढ़ और राजमहल अपने सौन्दर्य और शौर्य गाथाओं को सम्मोहित करते है। वैसे तो राजस्थान के हर किले की स्थापत्य शिल्प अपनी एक विशेषता लिये हुए है। लेकिन इन किलों में बीकानेर का किला स्थापत्य शिल्प, भौगोलिक स्थिति, विलक्षण कला सज्जा का आश्चर्यजनक उदाहरण है। बीकानेर का किला जूनागढ़ के नाम से जाना जाता है। थार के रेतीले टीलों के बीच, जो कभी जांगलू प्रदेश के नाम से जाना जाता था। शब्द कल्पद्रुम के अनुसार जिस स्थान पर जल और घास की कमी हो, जहां वायु और धूप की प्रबलता हो किंतु कई प्रकार का धान आदि होता हो तो ऐसे प्रदेश को जांगल देश कहते है। यह लक्षण बीकानेर के संदर्भ में बताये गये है। बीकानेर आज भी इन्हीं गुणों को सार्थक करता है।[1] इस पर एक से बढ़कर एक अट्टालिकाएं, हवेलियां और महलों की कतार अपने आप महलों की कतार अपने आप में आश्चर्य है।

प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासित धरोहरो, स्थापत्य कला, सांस्कृतिक और परम्परा की थाती अपने आंचल में समेटे बीकानेर अब सैलानियों के आकर्षण का भी प्रमुख केन्द्र बनता जा रहा है।[2] इस शहर की स्थापना जोधपुर के शासक राव जोधा के पुत्र राव बीका ने की थी। इसे सही रूप राजा रायसिंह ने दिया तथा इसे आधुनिक रूप देने का श्रेय महाराज गंगासिंह जी को दिया जाता है।[3] वस्तुतः बीकानेर के पुराने गढ़ की नींव तो आदि में बीकानेर के यशस्वी संस्थापक राव बीकाजी ने 1485 ई. में रखी थी। उनके द्वारा निर्मित प्राचीन किला नगर प्राचीर (शहरपनाह) के भीतर द.प. में एक उंची चट्टान पर विद्यमान है जो ''बीकाजी की टेकरी'' कहलाती है।[4] बीकानेर के दिवंगत महाराजा करणीसिंह ने इस संदर्भ में लिखा है,[5] लक्ष्मीनाथ जी के मंदिर के पास बीकाजी की टेकरी और पुगल के पुराने किले छोटे और मिट्टी की कच्ची ईटों के बने हुए है। बीकानेर में जूनागढ़ की नींव महाराजा रायसिंह ने 30 जनवरी, 1586 को रखी थी तथा इसका निर्माण 17 फरवरी 1594 ई. को पूरा हुआ।[6] महाराजा रायसिंह जब शाही सेना के साथ दक्षिण के अभियान पर था (संवत 1642) तब उसने बुरहानपुरा से अपने मंत्री करमचंद (बाछावत) के नाम खास रूक्का भेजकर नया कोट (दुर्ग) बनवाने का आदेश दिया। अतः मौजूदा गढ़ (पहले से विद्यमान किसी प्राचीनगढ़) के स्थान पर नींव भरी है।[7] बीकानेर दुर्ग अपने लालित्य एवं निर्माण की कला के कारण स्थल दुर्गो में सबसे महत्वपूर्ण है। यह धान्वन दुर्ग की श्रेणी में आता है। यह लाल पत्थरों से निर्मित है तथा दिखने में बहुत आकर्षक है।[8]

गढ़ की संरचना

गढ़ की संरचना मध्ययुगीन स्थापत्य–शिल्प में गढ़, महल और सैनिक जरूरतों के अनुरूप बना है। जूनागढ़ बहुत कुछ आगरे के किले से मिलता है, इस पर मुगल स्थापत्य का प्रभाव है।[9] चतुर्भुजाकार ढांचे में डेढ़ किलोमीटर के दायरे में किला पत्थर व रोड़ों से निर्मित है। जिसकी परिधि 1078 गज है।[10] जिसके चारों ओर नौ मीटर चौड़ी व आठ मीटर गहरी खाई है। किले में 37 बुर्ज बनी है, जिन पर कभी तोप रखी जाती थी। किले पर लाल पत्थरों को तराश कर बनाए गए कंगूरे देखने में बहुत सुंदर लगते है। गढ़ के पूर्व और पश्चिम के दरवाजों के कर्णपोल और चांदपोल कहते है। मुख्य द्वार सूरजपोल के अलावा दौलतपोल, फतहपोल, तरनपोल व धुर्वपोल है। प्रवेश द्वार की चौड़ी गली पार करने के बाद दोनों ओर काले पत्थरों की बनी महावत सहित हाथियों की उंची प्रतिमाएं है।[11] जिनके बारे में कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह जयमल मेड़तिया व फत्ता की मूर्तियां है। दरवाजे पर ऊपर गणेश जी की मूर्ति व राजा रायसिंह की प्रशस्ति है। सूरजपोल, जैसलमेर के पीले पत्थरों से बना है। दौलतपोल में मेहराब और गलियारे की बनावट अनूठी है। किले के भीतरी भाग में आवासीय इमारते, कुएं, महलों की लंबी श्रृंखला है जिनका निर्माण समय–समय पर विभिन्न राजाओं ने अपनी कल्पना अनुरुप करवाया था।[12] सूरजपोल के बाद एक काफी बड़ा मैदान है और उसके आगे नव दुर्गा प्रतीमा है। समीप ही जनानी डयोढ़ी से लेकर त्रिपोलिया तक पांच मंजिले महलों की श्रृंखला है। पहली मंजिल सिलहखाना, शिवनिवास, फीलखाना और गोदाम के पास पांच मंजिलों को पार करता हुआ उंचा घंटाघर है। दूसरी मंजिल में जोरावर हरमंदिर का चौक और विक्रम विलास है। रानियों के लिए उपर जालीदार बारहदरी है। भैरव चौक, कर्ण महल और 33 करोड़ देवी–देवताओं का मंदिर दर्शनीय है।[13] इसके बाद कुंवरपदा है, जहां सभी महाराजाओं के चित्र लगे है। जनानी ड्योढ़ी के पास संगमरमर का तालाब है, फिर कर्णसिंह का दरबार हाल है जिसमें सुनहरा काम उल्लेखनीय है। पास में चन्द्रमहल, फूलमहल, चौबारे, अनूप महल, सरदार महल, गंगा निवास, गुलाब मंदिर, डूंगर निवास और भैरव चौक है।[14]

चौथी मंजिल में रतन निवास, मोती महल, रंग महल, सुजान महल और गणपति विलास है। पांचवी मंजिल में छत्र निवास, पुराने महल, बारहदरिया आदि महत्वपूर्ण है। अनूप महल में सोने की पच्चीकारी एक उत्कृष्ट कृति है। इसकी चमक आज भी यथावत है। गढ़ के सभी महलों में अनूप महल सबसे ज्यादा सुंदर व मोहक है। महल के पांचों द्वार एक बड़े चौक में खुलते है। महल के नक्काशीदार स्तम्भ, मेहराव आदि की बनावट अनुपम है। फूल महल और चन्द्र महल में कांच की जड़ाई आमेर के चन्द्र महल जैसी ही उत्कृष्ट है। फूल महल

* **Corresponding author**
E-mail: pushplata.solin@gmail.com (Dr. Pushplata Solanki). https://orcid.org/0000-0002-5040-2927
E-mail: soldev.jpr@gmail.com (Dr. Devendra Singh Solanki). https://orcid.org/0000-0002-8110-3305
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v7n4.05
Received 18th April 2022; Accepted 25th April 2022; Available online 30th April 2022
2454-8367 /© 2022 The Authors. Published by Jai Maa Saraswati Gyandayini e-Journal (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

में पुष्पों का रूपांकन और चमकीले शीशों की सजावट दर्शनीय है।[15] अनूप महल के पास ही बादल महल है। यहां की छतों पर नीलवर्णी उमड़ते बादलों का चित्रांकन है। बादल महल के पास सरदार महल है। पुराने जमाने में गर्मी से कैसे बचा जा सकता था, इसकी झलक इस महल में है। गज मंदिर व गज कचहरी में रंगीन शीशों की जड़ाई बहुत अच्छी है। छत्र महल तम्बूनुमा बना है जिसकी छत लकड़ी की बनी है। कृष्ण–रासलीला की आकर्षक चित्रकारी इस महल की विशेषता है। पास ही रिहायशी इमारते है, जिनमें राजाओं की बांदियां व रखेल रहती थी। इन महलों में हाथी दांत का सुंदर काम भी देखने योग्य है। महलों में वास्तुकला राजपुत, मुगल, गुजराती शैली का सम्मिलित रूप है। पश्चिम देशों की वास्तुकला की छाप भी कई महलों में देखी जा सकती है। इन सबको देखकर जूनागढ़ को कलात्मक जगत का अद्भूत केन्द्र की संज्ञा दी जा सकती है।[16] सूरसिंह ने जूनागढ़ के पूर्व में सुर सागर का निर्माण करवाया, जो इस किलो को सुरम्य आकर्षण प्रदान करता है।[17] बीकानेर के राजाओं द्वारा मुगलों की अधिनता स्वीकार करने उनसे राजनैतिक मित्रता और निकट संबंध की वजह से बीकानेर के इस किले पर कोई बडे आक्रमण नहीं हुए है। जो भी लड़ाईयां हुई वे उसके जोधपुर, नागौर राठौड़ सहोदरों से हुई। इनमें नागौर के अधिपति बख्तसिंह ने 1733 ई. व 1743 ई. में आक्रमण किया।[18] प्रथम आक्रमण को बीकानेर के सुजानसिंह व कुंवर जोरावरसिंह ने विफल कर दिया। दूसरी बार भी बख्तसिंह ने कूटनीति का सहारा लेकर षड़यंत्र रचा, लेकिन षड़यंत्र का पर्दाफाश हो जाने के कारण उसे वापस लौटाना पड़ा।[19]

निष्कर्ष

अतः इन छोटी–छोटी लड़ाईयों को छोड़ दिया जाए, तो यहां पर शांति बनी रही तथा शासकों के कला और संस्कृति के विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन देने का अवसर मिला। जूनागढ़ की देखरेख का काम ट्रस्ट के तहत होता है। जूनागढ़ भारतीय, विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। बीकानेर दिल्ली से सीधा रेल द्वारा संबंधित है तथा 287 मील दूर है तथा जयपुर से 235 मील व जोधपुर से इसकी दूरी 171 मील पड़ती है। बम्बई से यह 759 मील है।[20] इसके अलावा सड़क मार्ग द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है। जूनागढ़ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसके प्रांगण में दुर्लभ प्राचीन वस्तुओं, शस्त्रास्त्रों, देव प्रतिमाओं विविध प्रकार के पात्रों तथा फारसी व संस्कृत में लिखे एवं हस्तलिखित ग्रंथों में बहुत समृद्ध संग्रहालय है।[21] सारतः बीकानेर का यह भव्य दुर्ग इतिहास, कला और संस्कृति की बहुमूल्य धरोहर को संजोये हुए है, जिसे देखने देशी–विदेशी पर्यटक वहां आते है।

सन्दर्भ

[1] गौस्वामी पुष्पा 'जमीन का जेवर जूनागढ़' राजस्थान सुजस संचय सम्पादक डॉ. अमरसिंह राठौड़, संस्करण 2001 पृ.837।
[2] वही, पृ.837।
[3] दुबे दीनानाथ, 'भारत के दुर्ग' निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली, 1993, पृ.83
[4] मनोहर राघवेन्द्रसिंह, 'राजस्थान के प्रमुख दुर्ग' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2006, पृ. 113।
[5] सिंह करणी, 'बीकानेर राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से संबंध,' पृ.16।
[6] गाइड टू राजस्थान इंडिया टूरिज्म डेवलपमेंट कोर्पोरेशन 1975ए फरीदाबाद पेज नं. 69।
[7] शर्मा दशरथ संपादक 'दयालदास री ख्यात ', भाग–2 अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर 2004, पृ.122।
[8] मीना बी आर हैरिटेज आफ राजस्थान मोन्यूमेंट एंड आर्कियोलोजिकल साइट 2009 पृ.274।
[9] दुबे दीनानाथ पृ.84।
[10] औझा हीराचंद गौरीशंकर 'बीकानेर का इतिहास ' वैदिक मंत्रालय, अजमेर पृ.179।
[11] दुबे दीनानाथ, पृ.84।
[12] औझ हीरानंद गौरीशंकर, पृ.179।
[13] गुप्ता मोहनलाल, 'राजस्थान के ऐतिहासिक दुर्ग' राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर संस्करण 2017 पृ. 323।
[14] वही, पृ.322।
[15] गाइड टू राजस्थान एपृ.69।
[16] दुबे दीनानाथ, पृ.85।
[17] गोयेट्ज हरमन द आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट एण्ड द रायल इंडिया एण्ड पाकिस्तान सोसाइटी बाइ ब्रूनो कसीरर ऑक्सफोर्ड पृ.69।
[18] औझा हीराचंद गौरीशंकर, पृ.302–304।
[19] मुंहणोत नैणसी री ख्यात, मुहणौत नेणसी नागरी प्रचारिणी सभा काशी वि.सं.,1982, पृ.201।
[20] मित्र रत्नलाल, 'राजस्थान के दुर्ग,' प्रकाशक साहित्यागार 950, धाणाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर संस्करण, 2008, पृ.115।
[21] मनोहर राघवेन्द्रसिंह, पृ.118।

****